नेता के कार्य

समुदाय कई प्रकार के होते हैं, जैसे—स्थायी, अस्थायी, संगठित, असंगठित आदि। इन सबों का अपना-अपना नेता होता है। सभी समुदायों के समक्ष कोई-न-कोई लक्ष्य अवश्य रहता है। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिये समुदाय के सदस्यगण क्रियाशील रहते हैं। वे लक्ष्य की प्राप्ति के लिये नेता से आदेश प्राप्त करते हैं और उसी आदेश का

---

1. "Leadership is the behaviour that effects the behaviour of other people more than their behaviour effects that of the leader."
—*Lapiere and Farnsworth*

Scanned with CamScanner

पालन करते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति में लीन हो जाते हैं। अतः नेता का मुख्य कार्य समुदाय के उद्देश्य की प्राप्ति करना होता है। इसके अतिरिक्त नेता समुदाय तथा उसकी नैतिक शक्ति को दृढ़ बनाता है। परन्तु सर्वाधिकारी नेता का कार्य प्रजातांत्रिक नेता के कार्यों से भिन्न होता है। तो भी सभी नेताओं का प्रमुख कार्य समुदाय की रचना करना, उसे सुदृढ़ बनाना, उसके उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए नीति, योजना आदि का निर्माण करना होता है। यहाँ पर हम नेता के कुछ प्रमुख कार्यों का उल्लेख करेंगे। वे निम्नलिखित हैं—

(१) **कार्यपालिका का कार्य करना** (The Leader as Executive)—नेता का प्रमुख कार्य अपने समुदाय का प्रबन्ध करना होता है। समुदाय की क्रियाओं को उचित रूप देने का कार्यभार नेता पर ही रहता है। प्रत्यक्ष रूप से भले ही नेता का हाथ नीति-निर्माण में न हो, परन्तु उस नीति का सही सम्पादन करना नेता का ही कार्य है। नेता कार्यों को अपने आनुयायियों के बीच बाँट देता है और स्वयं उनकी क्रियाओं का निरीक्षण करता है। कभी-कभी समूह के उद्देश्यों को शीघ्र प्राप्त करने के लिये उपसमिति का निर्माण करता है। इसके बाद उस उपसमिति को एक विशेष प्रकार का कार्यभार दे देता है और स्वयं उसकी देखभाल करता है। जैसे श्रीमती इन्दिरा गांधी भारत के योजना आयोग (Planning Commission) की नेता हैं। उनका काम योजना आयोग का निरीक्षण करना तथा उसके प्रबन्ध में सक्रिय भाग लेना है। इस तरह हम देखते हैं कि नेता कार्यपालिका का कार्य करता है।

(२) **योजना तैयार करने का कार्य करना** (The Leader as Planner)—प्रत्येक समुदाय के सामने कोई न कोई उद्देश्य अवश्य रहता है। उस उद्देश्य की प्राप्ति करना उसके सदस्यों का प्रथम कर्त्तव्य होता है। अब प्रश्न उठता है कि उस उद्देश्य की प्राप्ति किस प्रकार की जाय ? नेता उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये योजना बनाता है। इस योजना में वह उद्देश्य की प्राप्ति का उचित मार्ग तथा साधनो को निर्धारित करता है। तत्पश्चात् वह अन्य सदस्यों को बतलाता है कि किस प्रकार उद्देश्य की प्राप्ति की जाय। भविष्य की सारी बातों को ध्यान में रखकर ही योजना का निर्माण किया जाता है। नेता को इस योजना का रक्षक माना जाता है, क्योंकि वह योजना के प्रत्येक अंग को अच्छी तरह समझता है। इस प्रकार नेता का उत्थान या पतन इस योजना की सफलता पर निर्भर करता है। जब भारत स्वतन्त्र हुआ तो इसके सामने अनेक समस्याएँ उपस्थित हो गईं। इन समस्याओं के समाधान के लिए हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू ने पंचवर्षीय योजना का निर्माण किया और इस पंच-वर्षीय योजना की सफलता के लिए हम जी-जान से प्रयत्न कर रहे हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि नेता का मुख्य कार्य योजना तैयार करना होता है।

(३) **नीति-निर्माण का कार्य करना** (The Leader as Policy-Maker)—योजना-निर्माण के बाद नेता के सामने प्रश्न उठता है कि समूह की नीति क्या है ?

Scanned with CamScanner

यह देखा जाता है कि बिना नीति के योजना सफलीभूत नहीं हो सकती है। इसे ध्यान में रखकर नेता समुदाय की नीति का निर्माण करता है। उद्देश्य तथा योजना के अनुसार ही नीति का निर्माण करना होता है। जैसे—भारत के प्रधान मन्त्री ने भारत की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं को ध्यान में रखकर ही तटस्थ (neutral) नीति का निर्माण किया है। इस तरह हम देखते हैं कि समुदाय की नीति का निर्माण करना भी नेता का ही कार्य है।

(४) **विशेषज्ञ का कार्य करना** (The Leader as Expert)—प्रायः यह देखा जाता है कि जो व्यक्ति समुदाय का नेता होता है, उसके उद्देश्यों को अच्छी तरह समझता है। अतः योग्य तथा गुणवान् व्यक्ति ही समुदाय का नेता चुना जाता है। योग्य नेता अपने अपने अनुयायियों को उचित सलाह देने में समर्थ हो पाते हैं। किसी देश में यदि बाँध का निर्माण करना होता है तो उसका नेता सुयोग्य इन्जीनियर ही होता है। इसी प्रकार आर्थिक समस्या के समाधान तथा परिवार-नियोजन (family planning) की सफलता के लिये क्रमशः सुयोग्य अर्थशास्त्री तथा डॉक्टर नेता चुना जाता है। इस तरह नेता विशेषज्ञ का कार्य भी करते हैं।

(५) **प्रतिनिधि का कार्य करना** (The Leader as External Group Representative)—नेता का कार्य अपने समुदाय तक ही सीमित नहीं रहता है, बल्कि उसका सम्बन्ध अन्य समुदाय के साथ भी स्थापित हो जाता है। इस अवस्था में नेता अपने समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है। वह अपने समुदाय के आदर्श, योजना आदि को दूसरे समुदाय के समक्ष रखता है और विचार का आदान-प्रदान करता है। लेविन (Lewin) के मतानुसार नेता चौकीदार (gatekeeper) का कार्य करता है। इस तरह नेता का कार्य समुदाय का प्रतिनिधित्व भी करना है।

(६) **आन्तरिक सम्बंधों के नियंत्रक का कार्य करना** (The Leader as Controller of Internal Relationship)—नेता चौकीदार का ही कार्य नहीं करता है, बल्कि अपने समुदाय के सदस्यों के बीच उचित सम्बन्ध स्थापित करता है। समुदाय के प्रत्येक सदस्य आपस में झगड़ा-झंझट न करें, समुदाय के उद्देश्य की प्राप्ति के लिये मिल-जुल कर कार्य करें, समुदाय का नैतिक स्तर ऊँचा रहे, समुदाय अपने उद्देश्य की प्राप्ति के उचित मार्ग अपनाये, आदि का नियन्त्रण करना नेता का ही कार्य रहता है। नेता का बराबर यह प्रयास रहता है कि समुदाय के सदस्यों के बीच एकता की भावना बनी रहे।

(७) **पारितोषिक तथा दण्ड देने का कार्य करना** (The Leader as a Purveyor of Reward and Punishment)—समुदाय में बहुत से सदस्य होते हैं। सबों को कुछ-न कुछ कार्यभार दिया जाता है। अपने-अपने कार्य-सम्पादन के सिलसिले में प्रत्येक सदस्य को समुदाय के नियमों तथा आदर्शों का पालन करना होता है।

Scanned with CamScanner

यदि कोई सदस्य समुदाय के आदर्शों का पालन करते हुए कोई ऐसा कार्य कर देता है जिससे समुदाय की मान-मर्यादा में वृद्धि हो जाती है तो नेता द्वारा उस सदस्य को पारितोषिक दिया जाता है। पारितोषिक कई प्रकार के होते हैं। ठीक इसके विपरीत यदि कोई सदस्य समुदाय के आदर्शों के प्रतिकूल कोई ऐसा कार्य करता है जिससे समुदाय की हानि तथा बदनामी होती है तो नेता उस सदस्य को सजा देता है। उसके पद में कमी कर दी जाती है। कभी-कभी तो समुदाय से बहिष्कृत भी कर दिया जाता है। जैसे—भारत की कांग्रेस संस्था के नेता ने बहुत से सदस्यों को उनके दुर्व्यवहार के कारण अपनी संस्था से बहिष्कृत कर दिया है। इस तरह हम देखते हैं कि नेता का कार्य पारितोषिक तथा दण्ड देना भी है।

(८) **पंच तथा मध्यस्थ का कार्य करना** (The Leader as Arbitrator and Mediator)—एक ही समुदाय के सदस्यों के बीच कभी-कभी तनाव तथा संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इस संघर्ष का समाधान नेता ही करता है। वह पंच तथा मध्यस्थ बन कर सदस्यों के बीच समझौता करवा देता है। इसके अतिरिक्त सदस्यों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करने का कार्य भी नेता ही करता है। इस तरह नेता पंच तथा मध्यस्थ का कार्य करता है।

(९) **समुदाय के आदर्श का कार्य करना** (The Leader as Exemplar)—नेता ससुदाय के आदर्श का कार्य करता है। नेता अपने अनुयायियों के लिए आदर्श का निर्माण करता है। वह उदाहरण के रूप में अपने को ही अनुयायियों के बीच रखता है इस प्रकार नेता के व्यक्तित्व को देख कर ही किसी समुदाय के आदर्शों की जानकारी ठीक उसी प्रकार हासिल की जा सकती है जिस प्रकार चावल के कुछ दानों को देख-कर ही बोरे में पड़े हुए अन्य दानों की जानकारी हासिल की जाती है। पुनः यदि कोई कार्य करना होता है तो नेता स्वयं उसे करके अपने अनुयायियों को दिखलाता है। नेता की क्रिया को देख कर अनुयायीगण स्वयं कार्य करना प्रारम्भ कर देते हैं। उदाहरण—सर्वप्रथम गांधी जी ने हरिजनों के यहाँ रहना, खाना, पीना आदि प्रारम्भ करके लोगों के सामने एक उदाहरण पेश किया। इस उदाहरण से प्रभावित होकर उनके अनुयायीगण भी उनके द्वारा निर्देशित मार्ग पर चलना प्रारम्भ कर दिये। इस तरह नेता का कार्य आदर्श उपस्थित करना भी है।

(१०) **प्रतीक का कार्य करना** (The Leader as Symbol)—नेता अपने समुदाय का प्रतीक रहता है। नेता अपने समुदाय की नीति, योजना, उद्देश्य आदि को पूर्ण रूप से समझता है। इसलिए यदि हमें नेता के व्यक्तित्व का ज्ञान पूर्ण रूप से हो जाय तो हम समुदाय के उद्देश्यों को अच्छी तरह समझ पायेंगे। नेता समुदाय के ऐनक का कार्य करता है। जिस प्रकार ऐनक से चेहरे का स्पष्ट रूप झलकता है, उसी प्रकार नेता के व्यक्तित्व के आधार पर ही समुदाय की नीति, नैतिक शक्ति, उद्देश्य

Scanned with CamScanner

आदि को जाना जा सकता है। इसी कारण समुदाय के सदस्यों में परिवर्तन होता रहता है, पर नेता ज्यों-का-त्यों बना रहता है।

(११) **व्यक्तिगत उत्तरदायित्व का कार्य करना** (The Leader as Surrogate for Individual Responsibility)—सदस्यों के अच्छे तथा बुरे कार्यों की जवाबदेही नेता पर ही रहती है। इस तरह नेता का कार्य सदस्यों के कार्यों का उत्तरदायित्व लेना भी होता है। इसी प्रकार नेता तथा अनुयायियों के बीच भाई-चारे का सम्बन्ध रहता है। अनुयायीगण नेता की इज्जत करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। यदि कोई सदस्य कहीं पर दुर्व्यवहार करता है तो उसकी शिकायत नेता के पास ही पहुँचती है। इसके लिए नेता का ही उत्तरदायित्व समझा जाता है। फलतः नेता उस सदस्य को दण्ड देता है। इसके विपरीत यदि कोई सदस्य ऐसा कार्य कर देता है जिससे समुदाय का नैतिक स्तर ऊँचा हो जाता है तो इसका श्रेय नेता को ही मिलता है। युद्ध के मैदान में यदि सिपाहियों की जीत होती है तो इस जीत का श्रेय नेता को दिया जाता है और यदि हार होती है तो नेता की बदनामी होती है। अतः नेता का यह मुख्य कार्य है।

(१२) **आदर्श-निर्माण का कार्य करना** (The Leader as Ideologist)—नेता समुदाय के उद्देश्यों को ध्यान में रख कर ही आदर्श का निर्माण करता है। इस तरह समुदाय के लिए आदर्श-निर्माण करना भी नेता का ही कार्य है। अतः समुदाय के आदर्श के आधार पर नेता की मनोवृत्ति तथा विश्वास को जाना जा सकता है। महात्मा गांधी को हम उदाहरणस्वरूप ले सकते हैं। महात्मा गांधी ने सवर्ण हिंदुओं के सामने एक नये आदर्श को जन्म दिया, वह यह कि छुआछूत की बीमारी को रोको, हरिजनों को अपना भाई समझो। अतः नेता का कार्य आदर्श का निर्माण करना भी होता है।

(१३) **पिता का कार्य करना** (The Leader as Father Figure)—जिस प्रकार परिवार में पिता का स्थान होता है, उसी प्रकार समुदाय में नेता का स्थान होता है। अतः समुदाय के लिए नेता को पिता के समान कार्य करना पड़ता है। पिता अपने परिवार की रक्षा करता है तथा आमद-खर्च का हिसाब-किताब रखता है। इसके अतिरिक्त परिवार का समस्त उत्तरदायित्व पिता पर ही रखता है। यदि परिवार का कोई भी सदस्य गलती करता है तो इसकी शिकायत पिता के पास ही पहुँचती है। पिता इस शिकायत की छानबीन करता है और यदि इस शिकायत से संलग्न व्यक्ति को दोषी पाता है तो उसे सजा देता है। ठीक इसी प्रकार नेता भी अपने समुदाय का पिता ही माना जाता है। समुदाय के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए योजना तैयार करना, नीति-निर्धारण करना, आदर्श का निर्माण करना आदि कार्य नेता ही करता है। उससे नेता और अनुयायियो के बीच पिता-पुत्र का सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। अनुयायीगण भी नेता का सम्मान करते हैं, और उनके आदेश का सहर्ष

Scanned with CamScanner

पालन करते हैं। मनोविश्लेषकों ने भी उपर्युक्त कथन की पुष्टि अपने अनुयायियों के अध्ययन के आधार पर की है। रूजवेल्ट (Roosevelt), हिटलर (Hitler) तथा महात्मा गांधी इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

(१४) **बलि के बकरा का कार्य करना** (The Leader as Scape Goat)—कभी-कभी अनुयायियों द्वारा नेता के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव भी पेश किया जाता है। फलतः नेता और अनुयायियों के बीच संघर्ष छिड़ जाता है। अनुयायीगण नेता को असफल तथा अयोग्य साबित कर देते हैं। समुदाय की असफलता तथा दोष नेता के कन्धे पर ही लाद दिये जाते हैं। सभी सदस्य उसकी निन्दा करते हैं। फलस्वरूप नेता को अपने समुदाय को त्याग देना पड़ता है।

Scanned with CamScanner